IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, April 2026
Impact Factor: 8.2

इसके अतिरिक्त यहाँ इस पाद में योग ,समाधि व चित्त से संबंधित समस्त शांकाओं का निवारण प्रदान किया है। चित्त का वर्णन प्रदान करते हुए बतलाया गया है कि–

तदा विवेकानिम्नं केवल्यप्राग्भारं चित्तम्।। योग दर्शन–4/26

प्रत्येक मनुष्य में दो अवस्था होती है, अज्ञान व ज्ञान की अवस्था। यह चित्त अज्ञान की अवस्था व दशा में विषयों में लीन रहता है। परंतु ज्ञान की अवस्था में विवेक ज्ञान का उदय हो जाता है, इस समय साधक का चित्त विषय– वासनाओं में ना जाकर विनाश की ओर अग्रसित हो अपने ही कारण में लीन हो जाता है। यह चित्त जब दृष्टा के स्वरूप में स्थापित हो जाता है, प्रतिष्ठित होता है तो इसी अवस्था को कैवल्य के नाम से पहचाना जाता है।

उपसंहार : पातंजल योग सूत्र महर्षि पतंजलि प्रणीत योग सूत्र है। जो योग के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों में अनादिकाल से शिखर पर स्थापित है। यह योग का वह ग्रंथ है। जिसमें योग के गुढतम रहस्यों का अवतरण प्राप्त होता है। महर्षि पतंजलि जी ने इस योगशास्त्र, योग ग्रंथ के द्वारा उत्पन्न अल्प शब्दों में गुढतम से गुढतम मन्तव्यों को परिपूर्ण रूप से परिभाषित करने का सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है। यही उनकी साधना प्रणाली व यौगिक चिंतन का प्रमुख अवदान भी है।

महर्षि पतंजलि का यौगिक चिंतन मानव मात्र के लिए है। वे प्रत्येक मानव को उसके जीवन उद्देश्य व जीवन लक्ष्य की ओर अग्रसित करने का मार्ग प्रशस्त करने का उत्तम प्रयास इस योगसूत्र के माध्यम से कर रहे है। समस्त प्रकार के दुःखों का नाश करते हुए जीवन–मरण व बंधन से मुक्त होते हुए परमपद "कैवल्य" को प्राप्त करने के लिए उनके द्वारा उपदिृष्ट योग मार्ग भारतीय दर्शन की आधारशिला मानी जाती है। श्रेयस्कर होगा कि यदि कोई भी मानव उनके उपदिृष्ट योग मार्ग का पूर्णश्रद्धा से पालन करता है। तो निश्चित् ही वह कैवल्य का अधिकारी बन सकता है,साथ ही साथ महामानव पद ग्रहण कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. पातञजलयोग प्रदीप, श्री स्वामी ओमिनान्द तीर्थ, गीता प्रेम गोरखपुर, ISBN-81-293-0011-7
2. मुक्ति के चार सोपान, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, योग पब्लिकेशन बिहार ISBN - 978-81-85-787-92-3
3. पतन्जलियोग सूत्र, हरिकृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस गोरखपुर
4. योगदर्शनम् आचार्य उदयवीर शास्त्री, गोविन्दराम हंसानन्द प्रकाशन संस्करण– 2015
5. पतन्जलियोग दर्शन, स्वामी हरिहरानन्द, मोती लाल बनारसी दास, ISBN- 978-81-205-2255-9
6. योगदर्शनम्, आचार्य उदयवीर शास्त्री, गोविन्दराम हंसानन्द संस्करण 2015
7. महर्षि पातञजलयोग दर्शन, गीता प्रेस गोरखपुर, श्री हरिकृष्णदास गोयन्दका
8. योगदर्शनम् आचार्य उदयवीर शास्त्री, गोविन्दराम हसानन्द संस्करण 2015
9. श्रीमदभगवत,गीतातत्वविवेचनी टीका, जयदयालगोयन्दका, गीता प्रेस गोरखपुर 2016, तेरहवा पुनर्मुद्रण, ISBN- 81-293-0204-7
10. योग तत्वाह कल्याण, गीता प्रेस गोरखपुर, राधेश्या रवैय , संख्या 1–मुद्रण 1

सिद्धि वर्णन के अर्न्तगत सिद्धि के छः प्रकारों का वर्णन मिलता है। जैसे – प्रातिभ, श्रावण, वेदन, आदर्श, आस्वाद, वार्ता। इन समस्त सिद्धियों को यहाँ पर समाधि में विघ्न स्वरूप माना है। जो समाधि में उत्पन्न करते हैं। इस योग द्वारा समस्त भूतों पर विजय प्राप्ति के उपरान्त आठ सिद्धियों का भी वर्णन प्राप्त होता है। जैसे–

ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसम्पत्तद्धर्मानभिघातश्च।। योग दर्शन–3/45

इन आठों सिद्धियों का पूर्ण वृत्तान्त समाधि के बाधक तत्व के रूप में सान्निहित एवं वर्णित है। यह सिद्धियाँ इंद्रियजय के पश्चात् ही प्राप्त होती है। जब साधक अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है, तभी यह सिद्धियाँ प्रकट होती है। समाधि के अंत में "तारक" का स्वरूप भली भांति जानकर उन उपायों का अन्त करके चित्त अपने कारण में लीन होने के परिणाम स्वरूप मुक्ति प्राप्त होती है– भुवनज्ञानं सूर्ये सयमात्।। योग दर्शन–3/27

यही तीसरे पाद में एक और महत्वपूर्ण परिचर्चा प्राप्त होती है कि मानव देहं समाप्त होने के उपरांत मृत्यु के पश्चात् इस सूक्ष्म शरीर को चार अवस्था प्राप्त होती है। जैसे– पितृयाण व देवयान इत्यादि। यही पर उर्ध्वगति प्राप्ति हेतु पंच प्राण का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

उदानजयाज्जलपङ्कण्टकदिपृसंग़उत्क्रान्तिश्च।। योग दर्शन–3/39

महर्षि पतंजलि ने योग साधकों को यह बताने व समझाने का प्रयास किया है कि यें जो सिद्धियाँ है वास्तविकता में बड़ी चमत्कारिक एवं उपयोगी है, परंतु योग साधना में ये सिद्धियाँ उत्पन्न बाधक तत्व मानी जाती है। साधक इन सिद्धियों के मायाजाल में पडकर अपने साधना मार्ग व उद्देश्य से दिग्भ्रमित हो जाता है। जिससे लक्ष्य प्राप्ति असंभव हो जाती है। समाधि सेवकों व साधकों को पतंजलि ने इन सिद्धियों को त्यागने के लिए प्रेरित किया है। जब साधक इन सिद्धियों का परित्याग कर देता है तब समाधि की अवस्था प्राप्त होती है।

कैवल्यपाद : समाधिपाद महर्षि पतंजलिकृत योगसूत्र का चौथा और अंतिम पाद है। इस अध्याय में मात्र 34 सूत्रों का समायोजन किया गया है। इसी अध्याय के उपरांत योग सूत्र की समाप्ति का विधान भी है। पूर्व के अध्याय या पाद में जिन सिद्धियों का वर्णन अवतरित है। वे सब सिद्धियाँ केवल और केवल मात्र समाधि से ही प्राप्त होती है। परंतु पतंजलि जी ने विषय को और विस्तार प्रदान करते हुए सिद्धियों का विस्तृत स्वरूप समाज के समक्ष रखने का निश्चित ही सफल प्रयास किया है और सिद्धियों के अन्य प्रकारों व स्वरूप का वर्णन प्रदान करते हुए कहा कि –

जन्मौषाधिमन्त्रतपः समाधिजाः सिद्धयः।। योग दर्शन–4/1

यहाँ वे यह बतलाने का प्रयास कर रहे हैं कि कैवल्य की अवस्था को प्राप्त करना अथवा न करना यह कार्य चित्त के द्वारा ही सम्पादित होता है। अतः कैवल्य की अवस्था चित्त के अधीन मानी जाती चाहिए। इस हेतु कैवल्य में चित्तोंपयोगी ये पाँच सिद्धियाँ उपयोगी सिद्ध हो सकती है। जिसका वर्णन उन्होंने प्रदान किया है, वे सिद्धियाँ है–

- जन्म से होने वाली सिद्धि।
- औषधि से होने वाली सिद्धि।
- तप से होने वाली सिद्धि।
- मन्त्र से होने वाली सिद्धि।
- समाधि से होने वाली सिद्धि।

भी प्राप्त होता है। जिसे समस्त प्रकार के दुःखों का मूल कारण स्वीकार किया गया है; क्योंकि मानव मात्र जो भी कर्म करता है। वही कर्म धीरे–धीरे संस्कार का रूप धारण करते हुए अन्तः करण में एकत्र होते रहते हैं। जिसे एकत्रित रूप में कर्माशय कहा जाता है। इन्हीं कर्माशयों के फलीभूत क्लेश जन्म लेते हैं और जीव को इन कर्मों का फल भोगने के लिए अनेक योनियों में बार–बार जन्म भी लेना पड़ता है एवं मरना भी पड़ता है। इन समस्त प्रकार की योनियों में जो दुःख प्राप्त होता हैं। इन दुःखों का विनाश करने के लिए क्लेशों को मूलोन्छेदित करना पड़ता है। जिसके पश्चात् ही विवेक ज्ञान की प्राप्ति सम्भव हो पाती है। इस विवेक ज्ञान की प्राप्ति हेतु ही अष्टांग योग के विधान का निरूपण किया गया है।

आविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः क्लेशाः।। योग दर्शन–2/3

यही अविद्यादि पंच क्लेश है। जो मानव मात्र को अनन्त दुःख प्रदान करते है, साथ ही संसार चक्र में भ्रमण करने एवं जीवन मृत्यु के बन्धन में बन्धने को मजबूर कर देते है। साधनपाद से पूर्वोक्त पाद में क्लेशों को और अधिक सूक्ष्म रूप में निर्मित करने हेतु क्रिया योग का प्रकरण भी अवतरित होता है। इसी के अंतर्गत विपाक का स्वरूप एवं कारण का अवतरण भी प्राप्त होता है। तत्पश्चात् बिना पूर्ण ज्ञान के क्लेशों को नहीं त्यागा जा सकता इसका भी ज्ञान प्राप्त होता है; क्योंकि क्लेशों का ज्ञान शास्त्रों में सन्निहित है। इसी योग शास्त्र में हेय, हेय हेतु, हान, हानोपाय, के ज्ञान द्वारा चक्रव्यूह को स्व कारण में विलीन करने के लिए मुक्तिमार्ग है तथा विवेकज्ञान की प्राप्ति के बहिरंग एवं अन्तरंग भाव यम एवं नियम के रुप में स्थिर पाए गए हैं। इसी पाद में योग साधन रूपी अष्टांग योग का वर्णन प्राप्त होता है।

यमनियमासनप्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यानसमाधयोऽष्टावंगानि।। योग दर्शन–2/29

यहाँ पर इस विवेकख्याति प्राप्ति के लिए एवं पंच क्लेशों के पूर्ण ज्ञान के लिए अष्टांग योग का विधान प्राप्त होता है। इस अध्याय में अष्टांग योग के पूर्णस्वरुप का आरम्भ एवं बहिरंग साधनों का वर्णन प्राप्त होता है, अध्याय के आखिरी सूत्र में प्रत्याहार के लाभ का वर्णन देखने को मिलता है।

ततः परमा वश्यतेन्द्रियाणाम्।। योग दर्शन–2/55

विभूतिपाद : महर्षि पतंजलि ने अपने योगग्रंथ के तीसरे अध्याय को विभूतिपाद नाम प्रदान किया है। इस अध्याय में भी पूर्व अध्याय की भांति 55 सूत्रों का वर्णन प्राप्त होता है।

पूर्वोक्त अध्याय में महर्षि पतंजलि ने योग के बहिरंग साधनों का वर्णन प्रदान किया है, परंतु इस अध्याय के आरंभ में ही इन्होंने योग को और गहराई और गंभीरता की ओर प्रवेश कराने का प्रयास किया है। बहिरंग साधनों के अवतरण के उपरांत ही इन्होंने तीसरे अध्याय में इसके अन्तरंग साधनों का वर्णन अवतरित किया है। अतरंग साधन है– धारणा, ध्यान व समाधि ।

इसी अध्याय में इन्होंने इसके वर्णन के उपरांत एक और अंग का वर्णन प्रदान किया है। जिनका नाम संयम बतलाया गया है। संयम अंग को वर्णित करते हुए बतलाया गया है कि जब धारणा, ध्यान और समाधि तीनों एक साथ संयमित हो तो वह अवस्था संयम कहलाती है, जैसे–

त्रयमेकत्र संयमः।। योग दर्शन–3/4

यहाँ संयम स्थापित करने तथा ध्यान स्थापित करने के अतिरिक्त संयम एवं उसके फलों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, साथ ही भिन्न–भिन्न धेय पदार्थों में संयम स्थापित करने के अलग– अलग फल बतलाएँ गए हैं। इसके उपरांत विभूतिपाद में योग के महत्व का वर्णन प्राप्त होता है। योग महत्व वर्णन वचनोंपरान्त यहाँ सिद्धियों का वर्णन प्राप्त होता है।

ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते।। योग दर्शन–3/36

समाधि पाद : समाधिपाद योग ग्रंथमाला एवं योग सूत्र ग्रंथ का प्रथम अध्याय, जिसमें 51 सूत्र है। इसी अध्याय से महर्षि पतंजलि ने योग का अनुशासन आरंभ किया है। प्रत्येक साधको को योग विषय में प्रवेश करने के पूर्व अनुशासन में प्रतिबद्धित करने को कहा है।

अथ योगानुशासनम् ।। योग दर्शन–1/1

अर्थात् महर्षि पतंजलि ने प्रत्येक योगियों व साधकों को योग के अनुशासन में प्रतिबंध करने का प्रयास किया है और अब यहाँ से योग का अनुशासन आरंभ होता है। इन्होंने योगसूत्र के प्रथम अध्याय के प्रारंभ में ही प्रथमपाद में योग का स्वरूप व उसके लक्षणों का वर्णन प्रदान किया है। योग के आकार, प्रकार एवं स्वरूप वर्णन के उपरांत उन्होंने चित्त एवं उसकी वृत्तियों का भी वर्णन किया है। इस चित्त एंव उसकी वृत्तियो का वर्णन प्रदान करते हुए उन्होंने वृत्तियों की अभीष्ट संख्या पाँच बतलाई है।

पातंजल योग सूत्र के प्रथम अध्याय में चित्त एवं उसकी वृत्तियों के इतर इसी अध्याय में 17 एवं 18वें सूत्र में योग की सर्वोपरि परिकल्पना समाधि का लक्षण व स्वरूप का वर्णन भी प्राप्त होता है। इस अध्याय में समाधि का वर्णन इसी सूत्र के आगे 41वे सूत्र से समाप्ति तक सामाधि का वर्णन सबीज समाधि एवं निर्बीज समाधि के रुप में प्राप्त होता है। साथ ही साथ यहाँ आनंदानुगत एवं अस्मितानुगत समाधि का वर्णन भी प्रकट होता है। लेकिन यहाँ पर भी इसके पूर्ण स्वरूपका वर्णन प्राप्त नही होता है; किन्तु यह कहना अधिक सार्थक है कि यहाँ समाधि एवं उसके अंग जैसे आनंदानुगतसमाधि एवं अस्मितानुगतसमाधि का संक्षेप में वर्णन प्राप्त होता है। यहाँ पर सूत्रकार ने निर्बीज समाधि हेतु ही परवैराग्य का मार्ग प्रशस्त किया है। यद्यपि परवैराग्य निश्चित ही थोड़ा कठिन मार्ग है। तथपि यहाँ पर सरल मार्ग की भी व्यख्या प्राप्त होती है। जिसे ईश्वर की शरणागति मार्ग के नाम से भी जाना जाता है। प्रथम अध्याय में पूर्व वर्णित समाधि के दो भेदो में यहाँ पर सम्प्रज्ञात योग के भी दो भागों का वर्णन प्राप्त होता है– सविकल्प समाधि एवं निर्विकल्प समाधि।

यहाँ पर सूत्रकार का वर्णन श्रेयस्कर है। उन्होंने इसे वर्णित करते हुए बतलाया है कि सविकल्प तो समाधि योग की पूर्वावस्था मात्र है। इस अवस्था में विवेकज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। इसके विपरीत देखें तो निर्विकल्प समाधि–समाधि कि ऐसी अवस्था है। जिसमें चित्त निर्मल अवस्था को प्राप्त करता है साथ ही विवेक ज्ञान भी प्रकट हो जाता है। जब इस विवेक ज्ञान का प्रकटीकरण होता है। तब वह पुरूषख्याति का सूचक माना जाता हैं। योग में इसे यहीं पर वैराग्य की अवस्था मानी जाती है। इसी अवस्था में पुरुष एवं प्रकृति के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त साधक के सम्पूर्ण कर्मो व गुणों में आसक्ति का भाव भी उत्पन्न हो जाता है। इस स्वरूप में चित्त वृत्ति विहीन हो जाता है और उसमें कोई भी वृत्ति नहीं रह जाती। इसी को योग में निर्बीज समाधि या सर्ववृतिनिरोध रूप जाना जाता है। यही धर्ममेध समाधि है, जिसे असंम्प्रज्ञात योग के नाम से भी जाना जाता है।

साधनपाद : महर्षि पतंजलि द्वारा प्रणीत योग सूत्र में द्वितीय अध्याय को साधनपाद के नाम से जाना जाता है। साधनपाद में 55 सूत्रों का वर्णन प्राप्त होता है। इस अध्याय के प्रारंभ में ही पूर्वोक्त प्राप्त वर्णन समाधि हेतु मार्ग कि व्याख्या प्राप्त होती है, जिसे क्रिया योग के नाम से भी जाना जाता है। जो इस प्रकार है–

तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।। योग दर्शन–2/1

दूसरे अध्याय के प्रथम सूत्र में क्रियायोग का प्रतिपादन समाधि मार्ग व समाधि प्राप्ति के विषय–वस्तु की गंभीरता का सूचक माना जाना चाहिए। इसमें तीन अगों का वर्णन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर अविद्यादि पंच क्लेशों का वर्णन

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, April 2026
Impact Factor: 8.2

पातंजलि योग की अवधारणा व स्वरुप

अनुज यादव, शोधार्थी, योग विज्ञान विभाग, मोनाड विश्वविद्यालय हापुड, उतर प्रदेश
डॉ0 रवि दुबे, सहायक आचार्य योग विज्ञान विभाग, मोनाड विश्वविद्यालय हापुड, उतर प्रदेश

शोध सारांश : योग कीर्ति को प्रत्येक जन मानस तक पहुँचाने व मानव को महामानव बनाने वाली प्रक्रिया योग विद्या का रहस्य जितना गूढ माना जाता है। उसके कहीं अधिक योग विद्या के प्रणेता महर्षि पतंजलि का जीवन चरित्र है। योग के क्षेत्र में महर्षि का जीवन चरित्र वस्तुतः जो जन सामान्य के सामने हैं, परंतु आज भी उनके जीवन के ऐसे अनसुलझे पहलू हैं। जिनसे मानव मात्र अनभिज्ञ है। उनका सम्पूर्ण जीवन रहस्य से अभीभूत माना जाता है। उनका सम्पूर्ण जीवन योग के प्रति समर्पित था। अपने जीवन काल में उन्होंने बहुत से उत्कृष्ट कार्य किए परंतु योग क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत सराहनीय रहा। योग के क्षेत्र में उनके योगदान का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके द्वारा रचित योग सूत्र वर्तमान काल में भी योग का एक अद्वितीय ग्रंथ माना जाता है। जिसका साक्षी आज भी कोई ग्रंथ नहीं है।

मुख्य शब्द : महर्षि पतंजलि, योग, समाधि पाद, साधन पाद, विभूति पाद, कैवल्य पाद।

प्रस्तावना : योगमणि महर्षि पतंजलि जितने अद्भुत व विचित्र थे। उतना ही अद्भुत उनका अवतरण माना जाता है। ऐसी मान्यता हैं कि उनका जन्म उनके पिता की अंजली में ही अर्ध्यदान देते समय हुआ था। यह उर्ध्व लोक से ही अपने पिता की अंजली में आ गिरे, जिसके कारण उनका नाम पतंजलि पड़ा। उनकी माता का नाम गोर्णिका था। ऐसा माना जाता है कि एक गोलार्द् देश में निवास करती थी। महर्षि पतंजलि शेषनाग का अवतार भी माने जाते हैं। उनका नाम योग विद्या के शिखर पुरुष के रूप में स्थापित है। उनके जन्म काल को लेकर अनेक मत–मत्तान्तरों व विद्वानों के मध्य विवाद है। विद्वानों का एक समूह उनका जन्म 200 ई. पूर्व मानता है तो दूसरा इसे 500 ई. पूर्व स्वीकार करता है। परंतु यदि तार्किकता कि कसौटी पर रख कर देखें तो यह स्वीकार करना ज्यादा श्रेयस्कर है कि उनका जन्म 200 ई. पूर्व हुआ था।

इनके द्वारा रचित योगसूत्र एक अद्वितीय योग ग्रंथ माना जाता है। प्राचीन काल से वर्तमान काल तक इस ग्रंथ के समान योग ज्ञानवर्धक दूसरा कोई ग्रंथ नहीं हुआ। योग क्षेत्र में यह ग्रंथ प्राण स्वरूप माना जाता है। यह ग्रंथ एक उत्कृष्ट कोटि का ग्रंथ है जिसमें प्राप्त शिक्षाओं को ग्रहण करके कोई भी मानव मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

पतंजलि रचित यह योग सूत्र मोक्ष दायक ग्रंथ है। इससे प्राप्त शिक्षा व ज्ञान मोक्ष दायक माना जाता है। इससे पूर्व भी योग था। परंतु पतंजलि ने इस युग को एक आकार व स्वरूप प्रदान किया । योग को नई दिशा व दशा में प्रदान कर,एक सूत्र में बांधने का जो परम कल्याणकारी कार्य है।

महर्षि पंतजलि ने योग सूत्र को चार पादो में विभक्त किया, इसमें इन्होंने जीव की समस्त भ्रांतियों का पटाक्षेप निवारण भी प्रदान किया। जिसमें 195 सूत्रो का समावेश भी प्रदान किया।

योग सूत्र में इन्होने योग के गूढतम रहस्यो को भी उद्घाटित किया है।

DOI: 10.48175/568